माया ठगनी, हमने पहचानी

ब्रह्माकुमार शंकर, शान्तिवन

योगी हो या ध्यानी, ज्ञानी हो या अज्ञानी, धनी हो या निर्धन, बली हो या महाबली, इस भूतल पर जो भी इंसान है, सबके सामने एक प्रश्न है – माया, माया, माया। आखिर माया है क्या? कोई धन-संपत्ति को माया कह रहा है, कोई रूप-शृंगार को और कोई दुनिया की चकाचौंध को ही माया कह रहा है परंतु प्रश्न अभी तक है अनसुलझा। प्रिय पाठकगण, क्या आप जानते हैं कि माया क्या है?

एक पौराणिक कहानी के अनुसार, एक बार नारद जी ने भी अपने इष्ट श्री नारायण से यही प्रश्न पूछा था कि आखिर माया है क्या? श्री नारायण के बार-बार समझाने पर भी जब नारद का माया को जानने का उत्साह ठंडा नहीं पड़ा तो उन्होंने उसे एक लोटा दिया और बोले, जाओ पानी भरकर ले आओ। वे घूमते-घूमते गाँव की एक कुटिया के सामने पहुँचे, द्वार खटखटाने पर एक सुंदर युवती बाहर आई। नारद जी उसके आकर्षण में सुध-बुध खो बैठे और सोचने लगे, इससे शादी हो जाए तो कितना अच्छा हो। संकल्प की सिद्धि का वरदान तो उन्हें था ही, तुरंत शहनाइयाँ बजने लगी और दूल्हे बने नारद के गले में वरमाला पड़ गई। वे गाँव के जमाई बन गए, गाँव में ही सबको कथा सुनाने लगे, उनकी चार संतानें हो गईं। छोटा पुत्र एक फुट का था, दूसरा दो फुट का, तीसरा तीन फुट का और चौथा चार फुट का। एक दिन बादल फटने से गाँव में बाढ़ आ गई। नारद जी का पहला पुत्र डूबा, फिर दूसरा, फिर तीसरा और फिर चौथा भी डूब गया। इनके बाद पाँच फुट की पत्नी भी डूब गई। वे खुद छह फुट के थे, उनके भी नाक तक पानी पहुँच गया, तो तड़प कर बोले, हे प्रभु! प्रभु नाम लेते ही प्रभु को सामने खड़े पाया। पानी का एक लोटा लेने आया था नारद परंतु स्वयं ही संसार के लोटे में कैद हो गया। जब इस कैद से दम घुटा तभी उसे प्रभु याद आया।

प्रिय पाठको, भाइयो एवं बहनो, ब्रह्माकुमार और कुमारियो, यह दुनिया भी एक बेहद की नाटकशाला है। मूलवतन, परमधाम, शांतिधाम हमारे रहने का घर है। वहाँ से हम इस बेहद नाटकशाला में पार्ट बजाने आए थे। पाँच हज़ार वर्ष बीत गये, हमारे 84 जन्म पूरे हुए, हम अपने पार्ट में इतने व्यस्त हो गये कि प्रभु की पहचान ही खो बैठे। हममें से कोई डॉक्टर का पार्ट बजा रहा है, कोई जज का, कोई वकील का, कोई ब्रह्माकुमार का लेकिन हम यहाँ क्यों आए थे, हमारा लक्ष्य क्या था, क्या करने आए थे, क्या कर रहे हैं। वास्तव में अपने लक्ष्य को भूलना ही माया है।

आज हम देखते हैं कि कई विद्यार्थी उच्च अध्ययन के लिए अपने गाँव से शहर आते हैं। गरीब माँ-बाप अपनी जायदाद बेचकर उनके पढ़ने का खर्च जुटाते हैं परंतु बच्चे शहर जाकर कई बार, नारद की तरह माया में फँस जाते हैं। ऐसे ही कई बच्चे विदेश जाकर देश के उपकारों को भूल जाते हैं। यह भी तो माया है। कई बार किसी महिला के घर कोई आवश्यक चीज़ अचानक खत्म हो जाती है तो वह पड़ोसिन से माँगने जाती है। पड़ोसिन उसे मोहल्ले के, रिश्तेदारों के खट्टे-मीठे चर्चे सुनाने लगती है। वह बेचारी सुनने में घंटों बर्बाद कर देती है, जब होश आता है तो चीज लेके घर पहुँचती है, इस देर के कई बार गलत परिणाम भी भुगतने पड़ते हैं। अतः कर्त्तव्य पथ से विचलित करने वाली कोई भी कुप्रवृत्ति माया ही है। मानव का सबसे बड़ा कर्त्तव्य तो यह है कि वह सृष्टि पर अवतरित हुए भगवान को पहचानकर, काम, क्रोध, लोभ, ... आदि सभी विकारों से अपने मन को मुक्त करे और वापस घर परमधाम चलने की तैयारी करे। यदि वह ऐसा नहीं कर पा रहा है तो समझो कि माया की सांकल पाँव में पड़ी हुई है। यह अदृश्य सांकल दिखाई नहीं देती इसलिए लोगों का यह प्रश्न बना ही रहता है कि माया क्या है। जो ज्ञान के तीसरे नेत्र को खोल लेता है उसे ही स्वयं की, परमात्मा की और माया की सही पहचान मिल पाती है। ❖